सामाजिक वानिकी तथा पारि-पुनर्स्थापन केन्द्र इलाहाबाद

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून के अधीन अक्टूबर 1992 में उन्नत केन्द्र के रूप में सामाजिक वानिकी तथा पारि–पुनर्स्थापन केन्द्र, इलाहाबाद की स्थापना की गई। इस समय यह केन्द्र वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून की शाखा है। केन्द्र का उद्देश्य पूर्वी उत्तर प्रदेश, उत्तरी बिहार तथा उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश के विन्ध्य क्षेत्र में सामाजिक वानिकी और पारि–पुनर्स्थापन में व्यवसायिक महारथ हासिल करना है।

इस केन्द्र के मुख्य अनुसंधान क्रियाकलाप इस प्रकार है : रोपण स्टॉक सुधार कार्यक्रम, परती भूमि पुनर्स्थापन, कृषि वानिकी मॉडलों का विकास, वनीकरण द्वारा खनित क्षेत्रों का पुनर्स्थापन, पारिपद्धति की उत्पादकता, शीशम की मृत्यता पर अध्ययन, औषधीय पादप आदि।

वर्ष 2006-2007 के दौरान जारी परियोजनाएं

परियोजना 1 : स्थानीय लोगों में जागरूकता पैदा करने के लिए औषधीय पादप पौधशालाओं का विकास [एफ आर आई–254 / सी एस एफ ई आर–05]

स्थिति: एस्प्रागस रेसीमोसस (सतवार), विनका रोसिया, (सदाबहार), टीनोस्पोरा कार्डीफोलिया (गिलोय), क्लोरोफाइटम अरून्डीनेसियम (सफेद मूसली), रौवोल्फिया सर्पेन्टियाना (सर्पगंधा), वर्लेरिया प्रायोनाइटिस (कालाबांसा), प्लान्टागो ओवाटा (ईसबगोल), प्लम्बेगो जेलेनिका (चित्रक), एलोय वेरा (धीकुवार), केसिया एंग्वेस्टीफोलिया (सनाय), जिम्नेमा सेल्वेस्ट्री (गुड़मार), एकोरस केलेमस (बच), एबलमोक्स मोकेटस (मुश्क दाना), एन्ड्रोग्रैफिक्स पेनीक्यूलाटा (कालमेघ), सोरलिया कार्डीफोलिया (वावची), ओसीमम सैंकटम (तुलसी) और मेन्था प्रजाति की अनुसंधान पौधशाला के जड़ी बाग में रोपित किया गया और उनका अनुरक्षण तथा प्रबंधन किया जा रहा है।

पड़ीला गांव के स्थानीय लोगों के प्रशिक्षण / प्रदर्शन के लिए साइप्रस रोटंडस (नागरमोथा) और रोवोल्फिया सर्पेन्टियाना (सर्पगंधा) के नये प्रदर्शन भूखंडों को स्थापित किया गया और उनका अनुरक्षण किया जा रहा है। मुख्य प्रजातियों के औषधीय पादपों और पौधों पर साहित्य को किसानों में वितरित किया गया।

वर्ष 2006-2007 के दौरान शुरू की गई नई परियोजनाएं

परियोजना 1: पूर्वी उत्तर प्रदेश में बांस प्रजातियों के कृषि वानिकी मॉडलों का विकास [360 / सी एफ एफ ई आर–07]

स्थिति : जल्दी में चयनित गांवों में बांस के कृषि वानिकी नमूनों का विकास करने के लिए बांस की मांग–आपूर्ति स्थिति पर प्रश्नावली तैयार की गई और सर्वेक्षण किया गया।

पडीला गांव में डेन्ड्रोकेलेमस स्ट्रिक्टस तथा बेम्बूसा बम्बोस की पौधशाला स्थापित की गई और बांस प्रजातियों के अंकुरण और पौध वृद्धि पर बीज श्रेणीकरण के प्रभाव पर अध्ययन किया गया।

वर्ष 2006-2007 के दौरान जारी परियोजनाएं (बाहर से सहायता प्राप्त)

परियोजना 1 : राष्ट्रीय नेटवर्क कार्यक्रम के तहत जैट्रोफा पर अनुसंधान और विकास [निधिकरण निकाय : नोवोड़ बोर्ड]

स्थिति : नोवोड़ (NOVOD) बोर्ड के दिशा निर्देशों के अनुसार धन वृक्षों की पहचान करने और चिन्हित करने के लिए उत्तम रोपण सामग्री का सर्वेक्षण किया गया। डाटा को आकारिकीय तथा ऋतुजैविकीय आधार पर रिकार्ड किया गया। चिन्हित सी पी टी से जैट्रोफा के बीजों से तेल को तेल मात्रा विश्लेषण के लिए टेरी (टी ई आर आई), नई दिल्ली भेजा गया जिसकी रिपोर्ट मिल चुकी है।

पड़ीला पौधशाला में जट्रोफा करकस का
उद्गमस्थल परीक्षण

- ❖ जैट्रोफा के बीजों को बोने से पहले उपचारित करने के प्रभावों का अध्ययन किया गया।
- ❖ पड़ीला पौधशाला में सी पी टी के उद्गम परीक्षण किये गये। वृद्धि डाटा (ऊंचाई और व्यास) को रिकार्ड किया गया।
- ❖ झुंसी, इलाहाबाद की ब्लाक रोपणियों में 10000 पौधों को रोपित किया गया।
- ❖ प्याज के साथ जैट्रोफा का कृषि वानिकी परीक्षण किया गया।

सारांश : परियोजनाओं की संख्या

	2006–2007 में पूरी की गई परियोजनाओं की संख्या	2006–2007 में जारी परियोजनाओं की संख्या	2006–2007 में शुरू की गयी परियोजनाओं की संख्या
प्लान परियोजना	4	3	1
बाहरी परियोजनाएं	1	1	2
योग	**5**	**4**	**3**

शिक्षा और प्रशिक्षण

1. श्री ए के पाण्डे, भा.व.से. संस्थान प्रमुख ने ''मानव संसाधन विकास में नई प्रवृत्तियां और अनुभव'' पर आई एम टी आर गोवा में 9–13 अक्टूबर 2006 को चार दिवसीय प्रशिक्षण में भाग लिया।
2. श्री बी चौधरी ने कृषि वानिकी पर हरियाणा वन विकास कार्पोरेशन, पंचकूला में 29 जनवरी से 2 फरवरी 2007 तक चार दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया।

सम्मेलन/बैठकें/कार्यशालायें/सेमीनार/संगोष्ठी/प्रदर्शनियां

आयोजित

1. ''औषधीय पादपों पर प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन, 17 नवम्बर 2006।

सीएसएफईआर, इलाहाबाद में औषधीय पादपों की खेती के बारे में प्रशिक्षण एवं जागरूकता कार्यक्रम

2. एफ. आर. आई., देहरादून की सहायता से इलाहाबाद में अर्द्धकुम्भ मेले में जनवरी 2007 में एक माह का प्रदर्शन एवं प्रदर्शनी।

सहभागिता

1. श्री बी. चौधरी और डॉ. अनुभा श्रीवास्तव ने ''ग्रामीण विकास की शुरूआत : राष्ट्रीय परिदृश्य'' पर राजीव गांधी सूचना तकनीक संस्थान, अमेठी में 28 अगस्त 2006 को राष्ट्रीय स्तर पर ''जैट्रोफा में ग्रामीण रोजगार की क्षमता – विकास के नये आयाम'' पर प्रलेख प्रस्तुत किया।
2. श्री ए. के. पाण्डे, श्री बी. चौधरी, डॉ. अनुभा श्रीवास्तव, श्री एस. डी. शुक्ला और श्री अवनीन्द्र तिवारी (एस आर एफ) ने ''जैट्रोफा की खेती तथा बायो डीजल उत्पादन'', पर उत्थान, इलाहाबाद (उ०प्र०) द्वारा आयोजित सम्मेलन में 27 जनवरी 2007 को ''जैट्रोफा करकश तेल – बायो ईंधन के रूप में इसकी क्षमता'' पर प्रलेख प्रस्तुत किया।
3. श्री ए. के. पाण्डे ने एफ आर आई, देहरादून में 13–15 दिसम्बर 2006 तक ''रोपित वन पारितंत्र : सामाग्रियां तथा सेवायें'' पर कार्यशाला में भाग लिया।
4. श्री ए.के. पाण्डे ने सी डी एम वनीकरण तथा पुनर्वनीकरण (ए/आर) परियोजना की बाधाओं को दूर करने के लिए प्रस्तावित नीति संबंधी सुधारों पर पणधारियों की दो दिवसीय बैठक में भाग लिया जिसका आयोजन आई सी एफ आर ई द्वारा जोनम रिसर्च और फ्रेबर्ग विश्वविद्यालय एवं जर्मनी सिल्वीकल्चर संस्थान की सहभागिता में 14–15 सितम्बर 2006 को किया गया था।

विविध

पर्यावरण एवं वन मंत्रालय द्वारा प्रायोजित कार्यक्रम के अंतर्गत आगरा, इलाहाबाद, मेरठ, बरेली, शाहजांहपुर, मिर्जापुर, रेनुकूट, बलिया, जलौन तथा कानपुर में उत्तर प्रदेश वन विभाग के तत्वाधान में मानीटरिंग तथा मूल्यांकन कार्य सम्पन्न किया।